

अस्मदीय (von अस्मत्) adj. unser P. 4, 3, 1. Bh. g. 11, 26. R. 4, 37, 23. PANKAT. 162, 10. 243, 6. MEGH. 73. KATHAS. 20, 190.

अस्मद्भात (अस्मत् + रात) adj. von uns gegeben VS. 7, 46.

अस्मद्दुक् (अस्म + दुक्) adj. uns nachstellend, uns feindlich RV. 4, 36, 16. 8, 49, 7.

अस्मद्वाञ्छ (von अस्म und अञ्च, vgl. देवद्वाञ्छ u. s. w.) adj. zu uns hergewandt: (स्तोमाः) अस्मद्वाञ्छो दर्शतो मृधानि RV. 7, 19, 10. °अक् adv.: अस्मद्वाग्वाधानः सेहेभिः 10, 116, 16. अस्मद्वाग्वा दावचे वसूनाम् 9, 93, 4. अस्मद्वाक्स्मिं मिमीहि अवांसि 6, 19, 3. अस्मद्वाक्कुणुतो याचितो मनः (aus einem Liede) Âçv. Çr. 2, 10.

अस्मद्विध (von अस्मत् + विधा) adj. gleich uns oder mir, Unseresgleichen, Unsereins: न खल्वस्मद्विधास्तात पापमेवं प्रकुर्वते R. 4, 31, 6. भृत्यै-रस्मद्विधैः 5, 71, 8. DHŪRTAS. 88, 15. अस्मद्विधः SÄV. 4, 7. अस्मद्विधे Daç. 1, 24. अस्मद्विधस्य PANKAT. 99, 13.

अस्मत्त n. Ofen RĪJAM. im ÇKDr. — Vgl. अश्मत्त.

अस्मयुः (von अस्म) adj. uns zustrebend, nach uns verlangend, uns günstig: व्यभिन्द्र त्रायवो कृविष्मन्तो जगामहे । उत त्वमस्मयुर्वसो ॥ RV. 3, 41, 7. अक्का गिरः सुमतिं गेहमस्मयुः 1, 131, 7. याजुस्मयुः 135, 2. 131, 7. 142, 10. 3, 42, 1. 6, 48, 2. 7, 15, 8. 8, 19, 7. 59, 12. 9, 6, 1. 2, 5. 10, 93, 11. 14.

अस्माक adj. der unserige: सर्वेन रथीतमो ऽस्माकैनाभिपुर्वना (जेयि) RV. 6, 45, 15. अस्माकांसो मयवो नो व्यं च 7, 78, 5. 1, 97, 3. 100, 6. 5, 10, 6. 6, 12, 14. 10, 42, 10. — Wohl aus अस्म + अञ्च wie अनूक, अभीक u. s. w. Vgl. आस्माक.

अस्मिता (von अस्मि, 1. sg. von 1. अस्) f. das Ichbinsein, Selbstsucht, (vgl. अहंकारः); s. u. अग्निनिवेश 4.

1. अस्मृति (3. अ + स्मृति) f. Nichterinnerung, das Vergessen: संवत्स-रामृते KĀTJ. Çr. 24, 3, 1. 25, 13, 19. अस्मृतिं च वधस्य MBh. 3, 11087 (p. 372).

2. अस्मृति (wie eben) adv. unachtsam: यदस्मृतिं चकाम किं विदमे AV. 7, 106, 1.

अस्मेर (3. अ + स्मेर) adj. f. आ nicht schmollend, d. h. zutraulich, zuthunlich: तमस्मेरा युवतयो युवानं मर्मव्यमानाः परि यत्त्वापः RV. 2, 35, 4.

अस्मेरिति (अस्मे [s. u. अस्मा] + किति) f. Auftrag für uns: कास्मेरि-तिः का परितक्यासीत् RV. 10, 108, 1.

अस्म्यन्दमान (3. अ + स्म्य°) adj. nicht weggleitend RV. 4, 3, 10.

अस्यवामीय n. das mit den Worten अस्य वाम् (RV. 1, 164) beginnende Lied P. 5, 2, 29, Sch. M. 11, 250.

अस्यक्त्य und अस्यकृति verstärken in Ableitungen beide Glieder nach dem gaṇa अनुशतिकादि zu P. 7, 3, 20. Die beiden Wörter stehen neben असि-क्त्य und sind wohl in अस्य (= असि?) + क्त्य u. कृति zu zerlegen.

अस्युद्यत (असि + उद्यत) adj. mit erhobenem Schwerte (für उद्यतासि) P. 2, 2, 36, VĀRT. 2, Sch.

अस्त्र 1) m. Kopffhaar AK. 3, 4, 166. H. ç. 117 (अस्त). an. 2, 393. MED. r. 3. — 2) m. Ecke s. अश्र 1. — 3) n. Blut AK. 2, 6, 2, 15. TRĪK. 3, 3, 325. H. 622. an. 2, 393. MED. r. 3. Vgl. असन् und अस्त्र् und die mit अस्त्र anlautenden comp. — 4) n. Thräne s. अश्र 2.

अस्त्रकाण्ट m. Pfeil ÇKDr. angeblich nach HĀA. Es ist wohl अस्त्रकाण्ट zu lesen; vgl. अस्त्रकाण्टक.

अस्त्रवदिर (अस्त्र 3. + व°) m. eine rothe Mimosa (रत्नावदिर) RĪĠAN. im ÇKDr.

अस्त्रज (अस्त्र 3. + ज°) n. Fleisch (aus Blut entstehend) RĪĠAN. im ÇKDr.

अस्त्रजित् v. l. von अस्त्रजित् ÇKDr.

अस्त्रप (अस्त्र 3. + प° trinkend) 1) m. ein Rakshas AK. 1, 1, 4, 55. MED.

p. 14. — 2) f. आ. a) Bluteigel H. 1203. MED. — b) eine Dākinī MED.

अस्त्रपत्रक (von अस्त्र 3. + पत्र) m. N. einer Pflanze, = भिण्डावृत्त RĪĠAN. im ÇKDr. Es ist wohl भाण्डावृत्त Rubia cordifolia L. zu lesen.

अस्त्रपाला (von अस्त्र 3. + फल) f. N. einer Pflanze, Boswellia thurifera Roxb. (सहजकी), RĪĠAN. im ÇKDr.

अस्त्रमातृका (अस्त्र 3. + मा°) f. Nahrungssaft (शरीररस) RĪĠAN. im ÇKDr.

अस्त्रोधिनी (अस्त्र 3. + रो°) f. N. einer Pflanze, Mimosa pudica L., RATNAM. und RĪĠAN. im ÇKDr.

अस्त्रवत् (3. अ + स्त्र°) adj. nicht leck, von einem Schiffe RV. 10, 63, 10. VS. 21, 7.

अस्त्रविन्दुच्छदा (von अस्त्र 3. - वि° + छद्) f. N. eines Knollengewäch- ses (लक्ष्मणा नाम कन्दः) RĪĠAN. im ÇKDr.

अस्त्राम (3. अ + त्राम) adj. nicht steif, nicht lahm AV. 4, 31, 3.

अस्त्रार्जक (अस्त्र 3. + 2. अर्जक) m. eine weisse (sic!) Tulasi (Pflanze) RATNAM. im ÇKDr.

अस्त्रि s. अश्रि.

अस्त्रिध् (3. अ + त्रिध्) adj. keinen Schaden zufügend, fromm, friedlich: वधू RV. 4, 32, 24. कुर्यः VĀLAKH. 2, 8. कृतासः (Gespann der Açvin) RV. 4, 43, 4. von Göttern 1, 13, 9. 3, 9. 89, 3. 5, 46, 4.

अस्त्रिधान (3. अ + त्रि°) adj. dass. vom Gespann der Açvin RV. 7, 69, 8.

अस्त्रिर्वयस् VS. 14, 18. Nach MAHIDR.: अस्त्रि + वयस्, eher pl. von अ-स्त्रीविः TS. 4, 3, 2, 1 liest an der entspr. Stelle: अस्त्रीविश्कन्दः.

अस्तु s. अश्रु.

अस्तुत und अस्तुतव्रण s. अश्रुत und अश्रुतव्रण.

अस्त्रेधत् (3. अ + स्त्रे°) adj. = अस्त्रिध्: (अशनिः) अस्त्रेधत् वि नश्यतु RV. 8, 27, 18. (सदत) अस्त्रेधतो मरुतः सोम्ये मधौ 7, 59, 6. अस्त्रेधता मन्मना 3, 14, 5. 29, 9. 5, 80, 3. 8, 49, 8.

अस्त्रेमन् nach NAIGH. 3, 8 ein lobendes Wort. अस्त्रेजानन्नमृत् मर्त्यासो ऽस्त्रेमाणं त्रिणिं वीकुर्वन्मम् RV. 3, 29, 13. अस्त्रेमा वत्सः शिर्मावो अरावीत् 10, 8, 2.

अस्त्रक (von 3. अ + स्त्र) adj. f. अस्त्रका oder अस्त्रिका besitzlos P. 7, 3, 47.

अस्त्रवग (3. अ - स्त्र + ग°) adj. nicht zum eigenen Heerde gehend, ohne Heimath: अस्त्रवगमप्रज्ञसं करोत्यपरार्पणो भवति क्षीयते AV. 12, 3, 15.

अस्त्रवर्गता (von अस्त्रवग) f. Heimathlosigkeit: अस्त्रवर्गतामस्त्रवगतामवर्तिम् AV. 9, 2, 3. 12, 3, 40.

1. अस्त्रव्रज (3. अ + स्त्रव्रज) m. Schlaflosigkeit, Wachsein ÇAT. Br. 3, 2, 2, 22. n. (sic!) SHAPV. Br. 6, 4 in Ind. St. 1, 40.

2. अस्त्रव्रज (wie eben) 1) adj. schlaflos, wachsam: अस्त्रव्रजो यश्च जागृविः AV. 5, 30, 10. 8, 1, 13. यो रत्नस्त्रव्रजो विद्वादानो देवा भूमिम् 12, 1, 7. — 2) m. Gott, Gottheit AK. 1, 1, 4, 3. H. 89.

अस्त्रव्रजन् (3. अ + स्त्र°) adj. nicht schlüfrig, schlummerlos: अस्त्रव्रजो अनिमिषा अदब्धाः (आदित्याः) RV. 2, 27, 9. 4, 4, 12. VS. 34, 55.